



HIMALAYA, the Journal of the Association for Nepal and Himalayan Studies

Volume 38 | Number 1

Article 19

June 2018

Selected Poems

Manglesh Dabral

Follow this and additional works at: <http://digitalcommons.macalester.edu/himalaya>

Recommended Citation

Dabral, Manglesh (2018) "Selected Poems," *HIMALAYA, the Journal of the Association for Nepal and Himalayan Studies*: Vol. 38 : No. 1 , Article 19.

Available at: <http://digitalcommons.macalester.edu/himalaya/vol38/iss1/19>



This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivative Works 4.0 License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/).

This Literature is brought to you for free and open access by the DigitalCommons@Macalester College at DigitalCommons@Macalester College. It has been accepted for inclusion in HIMALAYA, the Journal of the Association for Nepal and Himalayan Studies by an authorized



Selected Poems

Acknowledgements

Nirupama Dutt is a poet writing in Punjabi. She is also a well-known translator from Punjabi into English. Her translation of revolutionary Punjabi poet Lal Singh Dil and an anthology of Punjabi short stories are published by Penguin. Nirupama lives in Chandigarh, where she also works as a journalist. Sarabjeet Garcha is a bilingual poet writing in English and Hindi. He translates from Hindi and Marathi into English. He has published three collections of poems in English and participated in various literature festivals. Sarabjeet lives in Delhi.

Selected Poems

Manglesh Dabral

Keshav Anuragi

केशव अनुरागी

यह ढोल एक समुद्र है साहब केशव अनुरागी कहता था
इसके बीसियों ताल हैं सैकड़ों सबद
और कई तो मर-खप गये हमारे पुरखों की ही तरह
फरि भी हैं संसार में आने और जाने अलग-अलग ताल साल
शुरू हो या फूल खलें तो उसके भी अलग
बारात के आगे-आगे चलती इसकी गहन आवाज
चढ़ाई उतराई और वशिराम के अलग बोल
और झोडा चांचरी पांडव नृत्य और जागर के वे गूढ़ सबद
जनिहें सुनकर पेड़ और पर्वत भी झूमते हैं अपनी-अपनी जगह
जीवन के उत्सव तमाम इसकी आवाज के बनिा जीवनहीन
यह जतिना बाहर बजता है उतना अपने भीतर भी
एक पाखे से फूटते बोल सुनकर बज उठता है दूसरे पाखे का कोई ढोल
बतलाता उस तरफ के हालचाल
देवताओं को नींद से जगाकर मनुष्य जातमें शामिल करता है
यह काल के वशिल परदे को बजाता हुआ
और जब कोई इस संसार से जाता है
तो मृत्यु का कातर ढोल सुनाई देता है

दूर-दूर से बुला लाता लोगों को
शवयात्रा में शामिल होने के लिए

लोग कहते थे केशव अनुरागी ढोल के भीतर रहता है
ढोल सागर के भूले-बसिरे तालों को खोजनेवाला बेजोड़ गायक
जो कुछ समय कुमार गंधर्व की संगत में भी रहा
गढ़वाल के गीतों को जसिने पहुंचाया शास्त्रीय आयामों तक
उसकी प्रतभिा के सममुख सब चमत्कृत
अछूत के घर कैसे जन्मा यह संगीत का पंडति
और जब वह थोड़ी पी लेता तो ढोल के तालों से खेलता गेंद की तरह
कहता सुनिए यह बादलों का गर्जन
और यह रही पानी की पहली कोमल बूंद
यह फुहार यह झमाझम बारशि
यह बहने लगी नदी
यह बना एक सागर वरिाट प्रकृता गुंजायमान
लेकनि मैं हूँ अछूत कौन कहे मुझे कलाकार
मुझे ही करना होगा
आजीवन पायलागन महाराज जय हो सरकार

बनिा शषिय का गुरू केशव अनुरागी
नशे में धुत्त सुनाता था एक भवषियहीन ढोल के बोल

किसी ने नहीं अपनायी उसकी कला
 अनछपा रहा वर्षों की साधना का ढोल सागर
 इस बीच ढोल भी कम होते चले गये हमारे गांवों में
 कुछ फूट गये कुछ पर नयरी पूड़े नहीं लगीं
 उनके कई बाजगी दूसरे धंधों की खोज में चले गये
 केशव अनुरागी
 मदहोश आकाशवाणी नजीबाबाद की एक कुर्सी पर धंसा रहा
 एक दनि वह हैरान रह गया अपने होने पर
 एक दनि उसका पैर कीचड़ में फंस गया
 वह अनजाने किसी से टकराया सड़क पर
 एक दनि वह मनुष्यों और देवताओं के ढोल से बाहर निकल गया
 अब वह रहता है मृत्यु के ढोल के भीतर.

Translation of the poem 'Keshav Anuragi'
by Sarabjeet Garcha

This *ḍhol* is an ocean, sir, Keshav Anuragi used to say
 It has tens of beats hundreds of percussions
 most of which have perished just like our ancestors
 Even then the beats for coming into
 and going out of this world are distinct
 So too those for the time when the year
 begins or when flowers bloom
 Its deep sound preceding the marriage procession
 its diverse thumps for ascent descent and pause
 and those abstruse beats for *jhorā*, *chācharī*,
paṇḍav nritya and *jāgar* hearing which
 even the trees and the mountains sway
 in their individual places
 All of life's festivities are lifeless without its sound
 It thumps with the same intensity within
 as it does without
 Hearing the sounds erupting from one hill slope

a drum on the other beats too
 and tells about the state of things there
 Beating the enormous tympanum of Time
 it rouses gods from sleep and
 assimilates them into humankind
 and when someone departs from this world
 the dismal *ḍhol* of death is heard
 calling people from far away to
 join in the funeral

People used to say that Keshav Anuragi lived inside the *ḍhol*
 He was a peerless singer searching for forgotten strains
 of the *Ḍhol Sāgar* who also spent some time
 in the company of Kumar Gandharva
 who propelled the songs of Garhwal to classical dimensions
 His talent astonished one and all
 How was this master of music born in an outcaste family?
 And when he was slightly drunk he would play
 with the beats of the *ḍhol* as if they were a ball
 He would say Listen up this is the roll of thunder
 and here is the first soft drop of water
 here comes pounding rain
 here a river starts flowing
 here forms a vast ocean and the resounding nature
 But I am an untouchable. Who would call me an artist?
 All my life I alone will have to genuflect
 and say I touch your feet, Maharaj
 Hail, my lord

When properly sozzled
 Keshav Anuragi the guru without a disciple
 would make us listen
 to the sounds of a futureless drum

Nobody made his art their own
Written after many years of devoted practice
*Ḍhol Sāgar*¹ never saw the light of day
In the meantime the *Ḍhols* in our villages
began to dwindle
Some burst and some didn't get new skin
stretched onto them
Many of the players went away in search of new vocations
The inebriated Keshav Anuragi remained slumped
in a chair at All India Radio, Najibabad
One day he became alarmed
to see that he existed
One day his foot stuck in mud
He unawares ran into someone on the street
One day he broke out of the *Ḍhol* of humans and gods
He now lives inside the *Ḍhol* of death

1 Keshav Anuragi's unpublished manuscript on the art of the *Ḍhol*.

Rāg Durgā

A memory of listening to this rāg sung by Bhimsen Joshi

राग दुर्गा

(भीमसेन जोशी के गाये इस राग को सुनने की एक स्मृति)

एक रास्ता उस सभ्यता तक जाता था
जगह-जगह चमकते दखिते थे उसके पत्थर
जंगल में घास काटती स्त्रियों के गीत पानी की तरह
बहकर आ रहे थे
किसी चट्टान के नीचे बैठी चड़िया
अचानक अपनी आवाज से चौंका जाती थी
दूर कोई लड़का बांसुरी पर बजाता था वैसे ही स्वर
एक पेड़ कोने में सहिरता खड़ा था
कमरे में थे मेरे पति
अपनी युवावस्था में गाते सखिभोरी रूम-झूम
कहते इसे गाने से जल्दी बढ़ती है घास

सरलता से व्यक्त होता रहा एक कठनि जीवन
वहाँ छोटे-छोटे आकार थे
बच्चों के बनाए हुए खेल-खिलौने घर-द्वार
आँखों जैसी खड़कियाँ
मैंने उनके भीतर जाने की कोशिश की
देर तक उस संगीत में खोजता रहा कुछ
जैसे वह संगीत भी कुछ खोजता था अपने से बाहर
किसी को पुकारता किसी आलगिन के लिए बढ़ता
बीच-बीच में घुमड़ता उठता था हारमोनियम
तबले के भीतर से आती थी पृथ्वी की आवाज

वह राग दुर्गा थे यह मुझे बाद में पता चला
जब सब कुछ कठोर था और सरलता नहीं थी
जब आखिरी पेड़ भी ओझल होने को था
और मैं जगह-जगह भटकता था सोचता हुआ वह क्या था

जसिकी याद नहीं आयी
जसिके न होने की पीड़ा नहीं हुई
तभी सुनाई दिया मुझे राग दुर्गा
सभ्यता के अवशेष की तरह तैरता हुआ
मैं बढ़ा उसकी ओर
उसका आरोह घास की तरह उठता जाता था
अवरोह बहता आता था पानी की तरह.

**Translation of the poem 'Rāg Durgā'
by Sarabjeet Garcha**

A path went up to that civilisation
its pebbles could be seen glittering all over
the songs of the women cutting grass in the forest
were gushing forth like water
a sparrow sitting under a rock would startle
with its call and fly away
far off in the distance some boy used to play
the selfsame notes on a flute
a tree in a corner stood quivering
in the room was my father in his
youth singing *Sakhī Morī Rūm-Jhūm*
he used to say this song makes grass grow faster

a difficult life kept getting articulated easily
tiny shapes existed there
games 'n' toys plus
houses 'n' premises made by children
window-like eyes
I tried to enter them and
kept searching long for something in that music
just as that music also searched for something
outside itself calling out for somebody

and stepping forward for an embrace
now and then the notes of the harmonium swirled
from inside the tabla rose the sound of the earth

that it was *Rāg Durgā* I came to know later
when everything was callous and there was no simplicity
when even the last tree was on the verge of dimming away
and I rambled here and there thinking what it was
that did not come to mind and
whose absence did not cause pain
only then did I hear *Rāg Durgā*
floating like the relics of a civilisation
I moved on towards it
its ascending scale rising like grass
and descending scale flowing like water

Gunanand Pathik

गुणानंद पथकि

एक झलक में ही दखि जाता था गुणानंद पथकि का पूरा जीवन
कतिने ही लोगों ने देखा होगा उन्हें
खंडहर हो रहे टहिरी कस्बे की मुख्य सड़क पर
बस अड़्डे की भीड़ में स्वर्णों की एक लहर की तरह प्रवेश करते हुए
गले से लटकता था पुराना हारमोनियम
और कंधे पर झोले में स्वरचति गीतों की पुस्तकियां
पहले चार आने और फरि पचास पैसे में एक
गुणानंद पथकि गाते थे पहाड़ को बदलने का गीत
गांव-गांव की दीदियों-भुलियों से कहते जागो जल्दी जाओ
तुमसे ही जायेंगे नटिल्ले पहाड़
यह बात लखि लो यह गीत सुन लो
क्यों गरीब के घर कंटिली घास की भी कलिलत है
कैसे अमीर के घर सजे हैं रात-दनि पकवान
गुणानंद पथकि को सुनते लोग टॉफी लेमनजूस भूलकर
खरीद लेते गीतों की कतिब
उसे पढ़ते हुए जाते बस में बैठ घर की ओर

स्त्रियां जो गाती हैं उन्हीं धुनों पर
गुणानंद पथकि ने बनाये अपने नये गीत
जैसे पुरानी चीज़ को नया बनाकर लौटाने में हो रचना का आनंद
कइयों ने सीखा उनसे संगीत का पहला पाठ
रामलीलाओं में अलग से सुनाई देती उनकी बहरे तवील
लोग पहचान जाते बजा रहा है संगीत का वह कारीगर
जो सरिफ़ सुनाता नहीं बदल भी देता है राग को
उनके गायन से ही शुरु होते थे कम्युनसिट पार्टी के जलसे तमाम
देहरादून टहिरी उत्तरकाशी पौड़ी तक
सफ़र में रहता था उनका छोटा-सा स्वप्न

गुणानंद पथकि जान नहीं पाये उनके जीते जी बदल रहा था कुछ
या बदलते-बदलते रह गया था कुछ

कई तरह के नये बाजे बजे पहाड़ में
पैसे की आवाज़ आने लगी जगह-जगह सुनाई दया व्यवसाय का हॉर्न
गीतों की कतिब से ज़्यादा बड़े हो गये पचास पैसे
कम्युनसिट पार्टी के पास भी आये इस बीच कई लाउडस्पीरकर
टहिरी में भागीरथी पर शुरु हुआ एक बड़ा बांध
गुणानंद गाते रहे वहा पुराना गीत
यही थी उनके जीवन की आखिरी झलक
फरि बैठने लगी उनकी आवाज़
मंद हो चला सुरीला वाद्य
भूलने लगे वे अपने रचे गीत
बचे-खुचे कम्युनसिट सोचते ही रहे
एक दनि हो पथकिजी का बड़ा-सा सार्वजनिक अभिर्दन
तभी हारमोनियम छोड़कर गये गुणानंद पथकि अज्ञात के पथ पर
पहाड़ का लोकगीत बनकर.

**Translation of the poem 'Gunanand Pathik'
by Nirupama Dutt**

In just a glance one could fathom
the whole life of Gunanand Pathik
Many must have seen him on the main road
of the decaying Tehri town, entering
the bus stand in a wave of musical notes
The old harmonium hung from his neck
pamphlets of his songs in his shoulder bag
that he sold first for a quarter of rupee
and later for a half.
Gunanand Pathik used to sing songs spelling
change for the mountains
calling out to the village folk to wake up
for with them would awaken the still mountains
he would sing songs that told the difference
between the rich and the poor

Listening to him
people would forget the toffees and lemon drops
buy his book of songs and read it
on the bus journey back home.

Gunanand Pathik had composed his songs
to the tunes of the women's folk songs
as though all joy lay in changing the old into the new
Many learnt from him first lesson of music
His voice was heard at the Ramlila
and people would know that these notes were
made by their musical craftsman
who knew not just to sing a raga
but even change it
With his songs began all the Communist Party rallies
from Dehradun to Tehri to Pauri
travelled his little dream always.

He knew not that something was changing around him
or that something had refused to change
Many new musical instruments resounded
in the mountains
Money was making its own music and
half a rupee became more powerful than
the book of songs
the Communist Party got big loudspeakers
A dam came up on the Bhagirathi in Tehri
Gunanand kept singing the old song
This was the last glimpse of his life
then his voice started growing faint
the notes of the musical instrument were lost
he started forgetting the songs
he had himself written and composed

The leftover Communists kept planning
a big reception to honour him
But Gunanand Pathik had given up his harmonium by then
and people had forgotten him like they forget a folk song.

Manglesh Dabral is a poet, journalist and translator. He is the author of five collections of poems, two collections of literary essays and sociocultural commentary, and a book of conversations. He also published a travel account of his experiences in the USA, where he resided for three months as a University of Iowa International Writing Program Fellow in 1991. His poems have been widely translated, and a selection from his collection, *This Number Does Not Exist*, was published by Poetrywala in India and BOA Editios, Rochester, New York. He has participated in numerous poetry festivals in India and Europe, and one of his poems was engraved at the entrance door of the city centre in Eislingen, Germany.

Nirupama Dutt is a poet writing in Punjabi. She is also a well-known translator from Punjabi into English. Her translation of revolutionary Punjabi poet Lal Singh Dil and an anthology of Punjabi short stories are published by Penguin. Nirupama lives in Chandigarh, where she also works as a journalist.

Sarabjeet Garcha is a bilingual poet writing in English and Hindi. He translates from Hindi and Marathi into English. He has published three collections of poems in English and participated in various literature festivals. Sarabjeet lives in Delhi.